नवद्रव्याणि

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» तर्कशास्त्र और इसके पदार्थ

प्रश्न 1 (आसान). तर्कशास्त्र की रचना किसने की है?
उत्तर – अन्नंभट्ट ने

प्रश्न 2 (आसान). मोक्ष का दूसरा नाम क्या है?
उत्तर – निःश्रेयस

प्रश्न 3 (मध्यम). तर्कशास्त्र के अनुसार, मोक्ष प्राप्ति के लिए किन पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है? किन्हीं दो के नाम बताइए।
उत्तर – द्रव्य और गुण (कोई भी दो)

प्रश्न 4 (कठिन). तर्कशास्त्र का छात्रों के लिए क्या महत्व बताया गया है?
उत्तर – यह व्याकरण और साहित्य आदि शास्त्रों के लक्षणों का पदकृत्य जानने की जिज्ञासा को बढ़ाता है।

» सात पदार्थ (सप्तपदार्थाः)

प्रश्न 5 (आसान). वैशेषिक दर्शन में कितने पदार्थों का वर्णन किया गया है?
उत्तर – सात (सप्त)

प्रश्न 6 (आसान). उन सात पदार्थों में से किन्हीं तीन के नाम बताओ।
उत्तर – द्रव्य, गुण, कर्म (या कोई भी तीन सही नाम)

प्रश्न 7 (मध्यम). 'द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायाभावाः सप्त पदार्थाः' – इस पंक्ति का क्या अर्थ है?
उत्तर – यह पंक्ति बताती है कि द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव, ये सात पदार्थ हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). तर्कशास्त्र के अनुसार, 'सप्त पदार्थों' का ज्ञान हमें किसमें मदद करता है?
उत्तर – सप्त पदार्थों का ज्ञान हमें 'सही ज्ञान प्राप्त करने' और 'मोक्ष' ('निःश्रेयस') तक पहुँचने में मदद करता है, जिससे 'विश्व का समग्र ज्ञान' मिलता है।

» नौ द्रव्य (नवद्रव्याणि)

प्रश्न 9 (आसान). वैशेषिक दर्शन के अनुसार 'नवद्रव्याणि' में 'जल' के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है?
उत्तर – अप (आपः)

प्रश्न 10 (आसान). निम्नलिखित में से कौन सा द्रव्य हमें दिशा का बोध कराता है?
उत्तर – दिक्

प्रश्न 11 (मध्यम). वैशेषिक दर्शन के 'नवद्रव्याणि' में से कौन से दो द्रव्य मुख्य रूप से हमारे आंतरिक अनुभव से जुड़े हैं?
उत्तर – आत्मा और मन

प्रश्न 12 (कठिन). समझाएँ कि 'आकाश' द्रव्य 'पृथ्वी' द्रव्य से किस प्रकार भिन्न है, उनके देखने या महसूस करने के आधार पर।
उत्तर – पृथ्वी एक ठोस, स्पर्शगम्य द्रव्य है जिसे हम देख और छू सकते हैं, जबकि आकाश एक अदृश्य, व्यापक द्रव्य है जो सिर्फ खाली स्थान या 'स्पेस' को दर्शाता है, जिसका कोई निश्चित रूप या आकार नहीं होता।

» चौबीस गुण (चतुर्विंशतिर्गुणाः)

प्रश्न 13 (आसान). निम्नलिखित में से 'गुण' कौन सा है: 'पानी' या 'ठंडा'?
उत्तर – 'ठंडा' गुण है।

प्रश्न 14 (आसान). क्या 'खुशबू' एक 'गुण' है?
उत्तर – हाँ, 'खुशबू' (गंध) एक गुण है।

प्रश्न 15 (मध्यम). इनमें से कौन सा गुण 'इंद्रिय' द्वारा नहीं जाना जा सकता: 'रूप', 'प्रयत्न', 'स्पर्श'?
उत्तर – 'प्रयत्न' इंद्रिय द्वारा नहीं जाना जा सकता।

प्रश्न 16 (कठिन). 'बुद्धि' और 'संस्कार' में क्या अंतर है? ये दोनों किस प्रकार के गुण हैं?
उत्तर – 'बुद्धि' ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति है, जबकि 'संस्कार' पिछले अनुभव या आदतों से बनने वाला प्रभाव है। दोनों 'आत्मिक' गुण हैं जो आत्मा में रहते हैं।

» पाँच कर्म (पञ्चकर्माणि)

प्रश्न 17 (आसान). हाथ को मोड़ना कौन सा कर्म है?
उत्तर – आकुंचनम्

प्रश्न 18 (आसान). पानी का बहना किस कर्म में आता है?
उत्तर – गमनम्

प्रश्न 19 (मध्यम). जब एक चिड़िया पेड़ पर बैठी थी और फिर उड़ गई – इसमें कौन-कौन से कर्म हुए?
उत्तर – चिड़िया का 'उड़ना' गमन है. अगर वो डाली से ऊपर उठी, तो उसमें 'उत्क्षेपण' भी शामिल हो सकता है.

प्रश्न 20 (कठिन). एक कुम्हार जब मिट्टी का घड़ा बनाता है और फिर उसे उठाता है, तब तक उसमें कौन-कौन से कर्म होते हैं?
उत्तर – मिट्टी को 'गूथना' और 'आकार देना' गमन के अंतर्गत आएगा. घड़े को 'उठाना' उत्क्षेपण होगा, और अगर वह उसे नीचे रखता है, तो 'अपक्षेपण'.

» सामान्य और विशेष

प्रश्न 21 (आसान). जो 'वस्तुत्व' सब चीज़ों में है, वह किस प्रकार का 'सामान्य' है?
उत्तर – पर सामान्य

प्रश्न 22 (आसान). 'गोत्व' (गाय होना) किस प्रकार का 'सामान्य' है?
उत्तर – अपर सामान्य

प्रश्न 23 (मध्यम). 'एक खास किताब का यह कवर' यह किस अवधारणा को दर्शाता है?
उत्तर – विशेष

प्रश्न 24 (कठिन). अगर कोई दो परमाणु एक जैसे दिखते हों, फिर भी उन्हें अलग मानने का कारण क्या है?
उत्तर – विशेष

» समवाय और अभाव

प्रश्न 25 (आसान). फूल और उसकी खुशबू के बीच कौन सा संबंध है?
उत्तर – समवाय

प्रश्न 26 (आसान). किसी चीज़ के बनने से पहले उसका अभाव क्या कहलाता है?
उत्तर – प्रागभाव

प्रश्न 27 (मध्यम). पानी में सूखापन (dryness) का अभाव कौन सा है?
उत्तर – अत्यन्ताभाव

प्रश्न 28 (कठिन). जब एक मूर्ति टूट जाती है, तो मूर्ति का अभाव कौन सा है? और यह क्यों हमेशा रहता है?
उत्तर – प्रध्वंसाभाव। यह इसलिए हमेशा रहता है क्योंकि टूटी हुई मूर्ति को वापस उसी अवस्था में नहीं लाया जा सकता।

» पृथ्वी का लक्षण और भेद

प्रश्न 29 (आसान). पृथ्वी का मुख्य लक्षण क्या है?
उत्तर – गंध

प्रश्न 30 (आसान). पृथ्वी के कितने भेद होते हैं?
उत्तर – दो

प्रश्न 31 (मध्यम). 'नित्या' पृथ्वी का रूप कैसा होता है?
उत्तर – परमाणु रूप

प्रश्न 32 (कठिन). एक उदाहरण देकर 'अनित्या' पृथ्वी को समझाइए।
उत्तर – घर, पर्वत, घड़ा ये सभी 'अनित्या' पृथ्वी के उदाहरण हैं क्योंकि इनका निर्माण और विनाश होता रहता है।

» जल (आपः) का लक्षण और भेद

प्रश्न 33 (आसान). जल का मुख्य लक्षण क्या है?
उत्तर – शीतस्पर्शवत् (ठंडा स्पर्श वाला)

प्रश्न 34 (आसान). अनित्य जल का एक उदाहरण दीजिए।
उत्तर – नदी का पानी / तालाब का पानी / वर्षा का जल

प्रश्न 35 (मध्यम). जल के 'शरीर, इंद्रिय, विषय' भेद को संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – शरीर भेद से हमारे शरीर में मौजूद जल; इंद्रिय भेद से स्वाद लेने वाली रसना इंद्रिय; और विषय भेद से उपभोग किया जाने वाला जल।

» तेज का लक्षण और भेद

प्रश्न 36 (आसान). तेज का स्पर्श कैसा होता है?
उत्तर – गर्म स्पर्श (उष्णस्पर्शवत्)

प्रश्न 37 (आसान). परमाणु के रूप में तेज का भेद क्या कहलाता है?
उत्तर – नित्य

प्रश्न 38 (मध्यम). सूर्य का प्रकाश तेज के किस भेद का उदाहरण है - नित्य या अनित्य?
उत्तर – अनित्य (कार्यरूपम्)

प्रश्न 39 (कठिन). जल और तेज के मूल लक्षण में क्या मुख्य अंतर है? संस्कृत पदों में बताइए।
उत्तर – जल का लक्षण 'शीतस्पर्शवत्' है, जबकि तेज का लक्षण 'उष्णस्पर्शवत्' है।

» वायु का लक्षण और भेद

प्रश्न 40 (आसान). वायु का मुख्य लक्षण क्या है?
उत्तर – रूपरहित और स्पर्शवान्।

प्रश्न 41 (आसान). वायु के कितने मुख्य भेद हैं?
उत्तर – दो, नित्य और अनित्य।

प्रश्न 42 (मध्यम). 'नित्य' वायु किस रूप में होती है?
उत्तर – परमाणुरूप में।

प्रश्न 43 (कठिन). अनित्य वायु के तीन भेदों के नाम बताएँ।
उत्तर – शरीर, इंद्रिय, विषय।

» आकाश, काल और दिक् के लक्षण

प्रश्न 44 (आसान). आकाश का मुख्य गुण क्या है? (संस्कृत में लिखें)
उत्तर – शब्दगुणकम्

प्रश्न 45 (आसान). जो 'हमेशा रहने वाला' हो, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – नित्यम्

प्रश्न 46 (मध्यम). 'काल' के कौन-कौन से लक्षण हैं? तीन लक्षण बताएँ।
उत्तर – अतीतादिव्यवहारहेतुः, एकः, विभुः, नित्यः।

प्रश्न 47 (कठिन). आकाश, काल और दिक् में क्या समानताएँ हैं?
उत्तर – तीनों 'एक', 'विभु' और 'नित्य' हैं।

» आत्मा का लक्षण और भेद

प्रश्न 48 (आसान). आत्मा का मुख्य लक्षण क्या है? (संस्कृत में)
उत्तर – ज्ञानाधिकरणम्

प्रश्न 49 (आसान). आत्मा के कितने भेद होते हैं?
उत्तर – दो

प्रश्न 50 (मध्यम). परमात्मा के मुख्य गुण क्या हैं?
उत्तर – सर्वज्ञः और एकः

प्रश्न 51 (कठिन). जीवात्मा परमात्मा से किस प्रकार भिन्न है? तीन मुख्य अंतर बताएं।
उत्तर – जीवात्मा हर शरीर में भिन्न होती है जबकि परमात्मा एक है। जीवात्मा शरीर से बंधी होती है (हालांकि नित्य है) जबकि परमात्मा सर्वज्ञ है और सभी बंधनों से परे है। जीवात्मा असंख्य हैं पर परमात्मा एक ही है।

» मन का लक्षण

प्रश्न 52 (आसान). मन किसका साधन है? (एक शब्द में)
उत्तर – दुःखाद्युपलब्धि

प्रश्न 53 (आसान). क्या मन का आकार बड़ा होता है?
उत्तर – नहीं, यह परमाणुरूप होता है।

प्रश्न 54 (मध्यम). मन को 'अनंत' क्यों कहा गया है? संस्कृत के पद के साथ समझाइए।
उत्तर – मन को 'प्रत्यात्मनियतत्वादनन्तं' कहा गया है, क्योंकि यह प्रत्येक आत्मा के लिए अलग-अलग होता है, जिससे इसकी संख्या अनंत हो जाती है।

प्रश्न 55 (कठिन). आत्मा और मन के बीच क्या संबंध है, और मन 'नित्य' क्यों कहलाता है?
उत्तर – आत्मा अनुभव करने वाली है, जबकि मन उन अनुभवों (दुःख-सुख) को आत्मा तक पहुँचाने का इंद्रिय या साधन है। मन 'नित्य' कहलाता है क्योंकि यह शाश्वत है, इसका कभी नाश नहीं होता, यह आत्मा के साथ हमेशा रहता है, बस अवस्थाएँ बदलती हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. तर्कशास्त्र का मुख्य उद्देश्य क्या है और इसके अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए किन पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है?

› पहले समझेंगे कि 'तर्कशास्त्र' हमें 'ज्ञान' और 'लॉजिक' की तरफ ले जाता है।

› फिर यह जानेंगे कि इसके रचयिता 'अन्नंभट्ट' के अनुसार, तर्कशास्त्र का 'मुख्य उद्देश्य' सही ज्ञान से 'निःश्रेयस' यानी मोक्ष की प्राप्ति है।

› और इस मोक्ष प्राप्ति के लिए 'द्रव्यादि सप्त पदार्थों' का ज्ञान आवश्यक है।

› वे सात पदार्थ हैं: द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव।

उत्तर – तर्कशास्त्र का मुख्य उद्देश्य सही ज्ञान के द्वारा निःश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति है। इसके लिए 'द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, और अभाव' नामक सात पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है।

उदाहरण 2. तर्कसंग्रह के अनुसार, 'विश्व का समग्र ज्ञान' किन सात पदार्थों में समाहित है?

› प्रश्न पूछता है कि 'विश्व का समग्र ज्ञान' किनमें है।

› हमने पढ़ा है कि तर्कशास्त्र के अनुसार, इन 'सप्तपदार्थाः' का ज्ञान ही 'निःश्रेयस' और 'लोकसिद्धि' की तरफ ले जाता है।

› और 'विश्व का समग्र ज्ञान इन सप्त पदार्थों में ही समाहित है' - यह पाठ में स्पष्ट कहा गया है।

› तो हमें 'सात पदार्थों' के नाम बताने होंगे।

उत्तर – तर्कसंग्रह के अनुसार, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव – इन सात पदार्थों में 'विश्व का समग्र ज्ञान' समाहित है।

उदाहरण 3. वैशेषिक दर्शन के अनुसार उन द्रव्यों के नाम बताएँ जो दिखाई नहीं देते लेकिन जिनका अस्तित्व है।

› पहचानें कि कुल नौ द्रव्य कौन से हैं: पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन।

› अब इनमें से उन द्रव्यों को अलग करें जिन्हें हम सीधे आँखों से नहीं देख सकते।

› पृथ्वी, जल, तेज (आग/प्रकाश), वायु को हम किसी न किसी रूप में देख या महसूस कर सकते हैं।

› आकाश को हम 'खाली जगह' के रूप में देखते हैं, पर उसका कोई ठोस रूप नहीं है।

› 'काल' (समय) को हम कभी देख नहीं सकते, केवल अनुभव करते हैं।

› 'दिक्' (दिशा) को भी हम देखते नहीं, सिर्फ़ समझते हैं।

› 'आत्मा' और 'मन' तो बिल्कुल अदृश्य हैं, इन्हें केवल महसूस किया जा सकता है।

उत्तर – वे द्रव्य जो दिखाई नहीं देते: आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन।

उदाहरण 4. नीचे दिए गए कौन से शब्द 'गुण' को दर्शाते हैं और कौन से 'द्रव्य' को?

› शब्द: कलम, लाल, मीठा, किताब, खुशी

› पहचानो 'कलम' क्या है? यह एक वस्तु है जिसे हम पकड़ते हैं, इससे लिखते हैं। तो यह 'द्रव्य' है।

› अब 'लाल' क्या है? यह एक रंग है, किसी चीज़ का गुण। जैसे कलम लाल हो सकती है। तो यह 'गुण' है।

› फिर 'मीठा'। यह एक स्वाद है, जैसे चीनी मीठी होती है। तो यह भी 'गुण' है।

› अब 'किताब'। यह पढ़ने वाली एक वस्तु है। तो यह 'द्रव्य' है।

› और 'खुशी'। यह एक भावना है जो हमारे अंदर होती है। यह 'सुख' नाम के गुण के अंदर आती है। तो यह भी 'गुण' है।

उत्तर – 'द्रव्य': कलम, किताब। 'गुण': लाल, मीठा, खुशी।

उदाहरण 5. संस्कृत में 'एक बालक गेंद फेंकता है' – इसमें कौन सा कर्म है और क्यों?

› यहाँ दो मुख्य क्रियाएँ हैं: बालक का 'गेंद फेंकना'.

› जब बालक गेंद को 'ऊपर उठाता' है या 'आगे फेंकता' है, तो इसमें 'उत्क्षेपण' कर्म होता है.

› और जब गेंद हवा में 'जाती' है या 'चलती' है, तो वह 'गमन' कर्म कहलाता है.

उत्तर – इसमें मुख्य रूप से 'उत्क्षेपण' (गेंद को उठाना/फेंकना) और 'गमन' (गेंद का हवा में जाना) कर्म हैं.

उदाहरण 6. नीचे दिए गए उदाहरणों में 'सामान्य' और 'विशेष' के प्रकार पहचानिए: 1. 'पेड़' होना 2. 'पौधा' होना 3. एक आम के पेड़ का 'आम का पेड़' होना

› पहले उदाहरण को देखते हैं: 'पेड़' होना। क्या यह बहुत व्यापक है या किसी खास समूह तक सीमित? यह एक व्यापक कैटेगरी है, इसमें कई तरह के पेड़ आ जाते हैं। तो यह 'पर सामान्य' का उदाहरण है।

› अब दूसरा उदाहरण: 'पौधा' होना। 'पौधा' भी एक सामान्य कैटेगरी है, लेकिन यह 'पेड़' से थोड़ी कम व्यापक है, इसमें सिर्फ 'पौधे' ही आते हैं। तो यह 'अपर सामान्य' का उदाहरण है।

› तीसरा उदाहरण: एक आम के पेड़ का 'आम का पेड़' होना। यह बहुत विशिष्ट बात है जो सिर्फ उसी खास आम के पेड़ में है, उसे दूसरे पेड़ों से अलग करती है। यह 'विशेष' का उदाहरण है।

उत्तर – 1. 'पेड़' होना: पर सामान्य 2. 'पौधा' होना: अपर सामान्य 3. एक आम के पेड़ का 'आम का पेड़' होना: विशेष

उदाहरण 7. नीचे दिए गए संबंधों में से 'समवाय' और 'अभाव' के प्रकार पहचानिए:

› 1. 'कपड़े में धागा है' - यहाँ कपड़ा और धागा एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते, धागा ही कपड़े का कारण है। यह 'समवाय' संबंध है।

› 2. 'पेड़ उगने से पहले बीज का अभाव था' - पेड़ की उत्पत्ति से पहले बीज का न होना, यह 'प्रागभाव' है।

› 3. 'मिट्टी का घड़ा तोड़ दिया, अब घड़ा नहीं है' - घड़ा बनने के बाद उसका नाश हो गया, और ये अभाव हमेशा रहेगा। यह 'प्रध्वंसाभाव' है।

› 4. 'हवा में खुशबू नहीं होती' - यह अभाव हमेशा रहेगा, हवा कभी खुद खुशबूदार नहीं हो सकती। यह 'अत्यन्ताभाव' है।

› 5. 'यह किताब पेन नहीं है' - किताब और पेन दो अलग-अलग चीज़ें हैं, एक-दूसरे में इनका अभाव है। यह 'अन्योन्याभाव' है।

उत्तर – 1. समवाय, 2. प्रागभाव, 3. प्रध्वंसाभाव, 4. अत्यन्ताभाव, 5. अन्योन्याभाव

उदाहरण 8. पृथ्वी का मुख्य लक्षण और उसके दो भेदों को स्पष्ट कीजिए।

› पहला चरण: पृथ्वी का मुख्य लक्षण 'गंध' है। कोई भी पदार्थ जिसमें गंध है, वह पृथ्वी द्रव्य की श्रेणी में आता है।

› दूसरा चरण: पृथ्वी के दो मुख्य भेद हैं - 'नित्या' और 'अनित्या'।

› तीसरा चरण: 'नित्या' पृथ्वी वह है जो परमाणु के रूप में होती है। परमाणु अविनाशी होते हैं और उनका कभी नाश नहीं होता।

› चौथा चरण: 'अनित्या' पृथ्वी वह है जो कार्य रूप में होती है। जैसे कि मिट्टी से बनी कोई वस्तु (घड़ा, ईंट, पहाड़ आदि)। ये वस्तुएं बनती और बिगड़ती रहती हैं, इसलिए इन्हें अनित्य कहा जाता है।

उत्तर – पृथ्वी का मुख्य लक्षण 'गन्ध' है। इसके दो भेद हैं - 'नित्या' जो परमाणु रूप में अविनाशी है, और 'अनित्या' जो कार्य रूप में है और जिसका निर्माण व विनाश होता रहता है।

उदाहरण 9. जल का लक्षण और उसके मुख्य दो भेद बताइए।

› पहले जल का लक्षण यानी उसकी पहचान बताएँगे।

› फिर जल के मुख्य 'नित्य' और 'अनित्य' भेद को समझाएँगे।

› 'नित्य' को परमाणुरूप और 'अनित्य' को कार्यरूप से जोड़कर स्पष्ट करेंगे।

उत्तर – जल का लक्षण है 'शीतस्पर्शवत्' – यानी जिसमें ठंडा स्पर्श हो। इसके दो मुख्य भेद हैं – 'नित्या' और 'अनित्या'। 'नित्या' जल परमाणुरूप में होता है, और 'अनित्या' जल कार्यरूप में होता है।

उदाहरण 10. तेज का मुख्य लक्षण क्या है और इसके कितने मुख्य भेद हैं?

› पहला चरण: तेज के लक्षण की पहचान करेंगे। हमारी किताब में लिखा है 'उष्णस्पर्शवत्तेजः', जिसका अर्थ है 'जिसका स्पर्श गर्म हो'।

› दूसरा चरण: तेज के मुख्य भेदों को जानेंगे। पाठ के अनुसार, 'तच्च द्विविधं', यानी 'यह दो प्रकार का है'।

› तीसरा चरण: उन भेदों के नाम देखेंगे। ये हैं 'नित्यम्' और 'अनित्यम्'।

› चौथा चरण: 'नित्य' का स्वरूप 'परमाणुरूपम्' है और 'अनित्य' का स्वरूप 'कार्यरूपम्' है।

उत्तर – तेज का मुख्य लक्षण 'उष्णस्पर्शवत्' है, यानी जिसका स्पर्श गर्म हो। इसके दो मुख्य भेद हैं: 'नित्य' (परमाणु के रूप में) और 'अनित्य' (कार्य के रूप में)।

उदाहरण 11. संस्कृत के अनुसार वायु के लक्षण और उसके मुख्य दो भेदों को उदाहरण सहित समझाएं।

› सबसे पहले वायु का लक्षण बताएंगे: 'रूपरहितः स्पर्शवान् वायुः'। इसका अर्थ है कि वायु का अपना कोई रूप (आकार या रंग) नहीं होता जिसे देखा जा सके, लेकिन उसे स्पर्श (छूकर) महसूस किया जा सकता है।

› अब इसके मुख्य दो भेद बताएंगे: 'स द्विविधः - नित्योऽनित्यश्च।' यानी वायु दो प्रकार की होती है - नित्य और अनित्य।

› पहला भेद है 'नित्य' वायु: 'नित्यः परमाणुरूपः'। इसका मतलब है कि जो वायु परमाणु के रूप में होती है, वह नित्य कहलाती है। इसे हम अपनी आंखों से देख या महसूस नहीं कर सकते, यह अविनाशी है।

› दूसरा भेद है 'अनित्य' वायु: 'अनित्यः कार्यरूपः'। इसका अर्थ है कि जो वायु कार्य रूप में हमें अपने आसपास दिखाई या महसूस होती है, वह अनित्य कहलाती है। जैसे चलती हुई हवा, आंधी, तूफान आदि।

› फिर अनित्य वायु के तीन प्रकार बताएंगे: 'पुनस्त्रिविधः - शरीर, इंद्रिय, विषयभेदात्।' अर्थात् अनित्य वायु भी शरीर, इंद्रिय और विषय के भेद से तीन प्रकार की होती है। 'शरीर' यानी हमारे शरीर के अंदर जो प्राणवायु है। 'इंद्रिय' यानी जिससे हम स्पर्श महसूस करते हैं (त्वचा)। और 'विषय' यानी जो हवा हमें बाहर महसूस होती है, जैसे चलती हवा।

उत्तर – वायु रूपरहित और स्पर्शवान् द्रव्य है। यह दो प्रकार की होती है: 'नित्य' (परमाणुरूप) और 'अनित्य' (कार्यरूप)। 'अनित्य' वायु के फिर तीन भेद होते हैं - शरीर, इंद्रिय और विषय।

उदाहरण 12. संस्कृत में 'काल' और 'दिक्' के मुख्य लक्षण क्या हैं?

› पहले हम 'काल' के लक्षण देखेंगे। किताब कहती है, 'अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः'। इसका मतलब है कि 'काल' हमें भूतकाल ('अतीत'), वर्तमान और भविष्य के व्यवहार को समझने में मदद करता है।

› फिर है 'स चैको विभुर्नित्यश्च्य'। यानी काल भी 'एक' है (बहुत सारे काल नहीं हैं), 'विभु' है (हर जगह है, हर समय है), और 'नित्य' है (कभी खत्म नहीं होता)।

› अब 'दिक्' के लक्षण देखते हैं। 'दिक्' का अर्थ है 'दिशा'। किताब कहती है, 'प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्'। मतलब 'दिक्' ही 'पूर्व' (प्राची), 'पश्चिम' आदि दिशाओं के व्यवहार का कारण है।

› आगे लिखा है, 'सा चैका। नित्या विभ्वी च'। मतलब 'दिक्' भी 'एक' है (दिशाएं एक ही हैं, उनके नाम अलग-अलग हैं), 'नित्या' है (हमेशा रहने वाली) और 'विभ्वी' है (हर जगह फैली हुई, व्यापक)।

उत्तर – काल का मुख्य लक्षण 'अतीतादिव्यवहारहेतुः' है और दिक् का मुख्य लक्षण 'प्राच्यादिव्यवहारहेतुः' है। दोनों ही 'एक', 'विभु' और 'नित्य' हैं।

उदाहरण 13. आत्मा के मुख्य लक्षण और उसके दो भेदों का वर्णन करें।

› सबसे पहले, हम आत्मा के मुख्य लक्षण को समझेंगे। हमारा पाठ कहता है: 'ज्ञानाधिकरणमात्मा'। इसका अर्थ है कि ज्ञान का आधार आत्मा है। यानी, जो भी हम जानते हैं, समझते हैं, महसूस करते हैं, वह सब आत्मा के कारण ही संभव है।

› अब इसके भेदों पर आते हैं। पाठ में दिया है: 'स द्विविधः- जीवात्मा परमात्मा चेति'। इसका मतलब है कि आत्मा दो प्रकार की होती है - जीवात्मा और परमात्मा।

› फिर, 'तत्रोत्तरः सर्वज्ञः'। यहाँ 'उत्तरः' मतलब बाद वाला, यानी परमात्मा। 'सर्वज्ञः' मतलब जो सब कुछ जानता है। तो, परमात्मा 'सर्वज्ञ' है।

› आगे, 'परमात्मा एक एव'। मतलब परमात्मा एक ही है, असंख्य नहीं।

› और अंत में, 'जीवस्तु प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च'। 'जीवस्तु' मतलब जीवात्मा, 'प्रतिशरीरं भिन्नः' यानी हर शरीर में अलग-अलग होती है। 'विभुः' का अर्थ है व्यापक (सर्वव्यापी), और 'नित्यः' मतलब जो कभी खत्म नहीं होती, हमेशा रहती है। इस प्रकार, जीवात्मा हर शरीर में अलग-अलग होती है, व्यापक होती है और नित्य होती है।

उत्तर – आत्मा का मुख्य लक्षण 'ज्ञानाधिकरण' है, अर्थात ज्ञान का आधार। इसके दो भेद हैं: जीवात्मा और परमात्मा। परमात्मा 'सर्वज्ञ' (सब कुछ जानने वाला) और 'एक' (एक ही) है। जबकि जीवात्मा 'प्रतिशरीरं भिन्न' (हर शरीर में अलग-अलग), 'विभु' (सर्वव्यापी) और 'नित्य' (अनादि और अनंत) है।

उदाहरण 14. प्रश्न: मन का मुख्य कार्य क्या है और उसकी तीन प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

› पहला चरण: मन का मुख्य कार्य 'दुःखाद्युपलब्धिसाध्नमिन्द्रियं मनः' सूत्र से समझेंगे, यानी यह दुःख और सुख के अनुभवों को प्राप्त करने का साधन है।

› दूसरा चरण: उसकी पहली विशेषता 'प्रत्यात्मनियतत्वादनन्तं' है, जिसका अर्थ है कि यह प्रत्येक आत्मा के लिए अलग-अलग होता है, इसलिए अनंत है।

› तीसरा चरण: दूसरी विशेषता 'परमाणुरूपं' है, जिसका मतलब है कि मन परमाणु के समान अत्यंत सूक्ष्म होता है।

› चौथा चरण: तीसरी विशेषता 'नित्यं च' है, अर्थात मन शाश्वत और अविनाशी है।

उत्तर – मन का मुख्य कार्य दुःख, सुख आदि अनुभवों को प्राप्त करना है। इसकी तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं: यह प्रत्येक आत्मा के लिए अलग (अनंत), परमाणु के समान सूक्ष्म (परमाणुरूप), और शाश्वत (नित्य) होता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• तर्कशास्त्र के सात पदार्थों के नाम और उनके सामान्य परिचय को अच्छे से याद कर लेना, क्योंकि ये अक्सर एक या दो नंबर के प्रश्न में पूछे जाते हैं।

• इन 'सात पदार्थों' के नाम और उनका क्रम सीधे प्रश्न में आ सकता है, तो इन्हें बिल्कुल सही से याद रखना।

• यह अवधारणा अक्सर छोटे प्रश्नों में पूछी जाती है, खासकर 'सामान्य' के दो प्रकार और 'विशेष' का कार्य। परिभाषा और उदाहरण अच्छे से याद करना।

• समवाय और अभाव के चारों प्रकारों की परिभाषा और एक-एक उदाहरण याद रखना बहुत ज़रूरी है। बोर्ड परीक्षा में सीधा प्रश्न आ सकता है कि 'अभाव के प्रकारों का वर्णन कीजिए सउदाहरणम्' (उदाहरण सहित)।

• यह प्रश्न 'पृथ्वी का लक्षण और भेद' के रूप में अक्सर सीधे पूछा जाता है, खासकर एकपद में 'पृथ्वी का लक्षण क्या है?' या पूर्ण वाक्य में भेद बताने के लिए।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। 'शीतस्पर्शवत्य आपः' यह परिभाषा और 'नित्या अनित्या' भेद सीधे पूछे जा सकते हैं, तो इन्हें अच्छे से याद करें।

• तेज के लक्षण 'उष्णस्पर्शवत्तेजः' को सीधा याद रखना, यह एक नंबर के प्रश्न में अक्सर पूछा जाता है।

• यह प्रश्न 'वायु का लक्षण और भेद' बोर्ड परीक्षा में सीधा-सीधा पूछा जा सकता है, इसलिए इसे अच्छे से याद करना।

• इन तीनों द्रव्यों के लक्षण और उनकी समानताएँ (एक, विभु, नित्य) बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। 'शब्दगुणकमाकाशम्' और 'अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः' जैसे वाक्य सीधे प्रश्न में आ सकते हैं।

• आत्मा के लक्षण और उसके दोनों भेदों (जीवात्मा और परमात्मा) के गुणों को संस्कृत शब्दों के साथ याद रखना बहुत ज़रूरी है। यह सीधे-सीधे प्रश्न के रूप में आता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› तर्कशास्त्र: अन्नंभट्ट द्वारा रचित, मोक्ष हेतु 'सप्त पदार्थों' का ज्ञान।

› द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव - ये सप्त पदार्थ हैं।

› सामान्य = समानता (पर/अपर), विशेष = नित्य द्रव्यों में भेदक

› समवाय - नित्य संबंध; अभाव - नहीं होना (प्राग, प्रध्वंस, अत्यन्त, अन्योन्य).

› पृथ्वी = गन्धवती; भेद: नित्या (परमाणु), अनित्या (कार्यरूप)।

› जल: शीतस्पर्शवत्; नित्य (परमाणु), अनित्य (कार्य); शरीर-इंद्रिय-विषय भेद.

› तेज: उष्णस्पर्शवत्, नित्य/अनित्य, शरीर/इंद्रिय/विषय भेद।

› वायु: रूपरहित, स्पर्शवान्; नित्य (परमाणु), अनित्य (कार्य: शरीर, इंद्रिय, विषय)

› आकाश: शब्दगुणक, काल: अतीतादि हेतु, दिक्: प्राच्यादि हेतु; सभी एक, विभु, नित्य।

› आत्मा: ज्ञानाधिकरण, जीवात्मा (भिन्न, नित्य), परमात्मा (सर्वज्ञ, एक)